# पाठ 1

**देवनागरी लिपि के स्वर और व्यंजन; ध्वनियों का वर्गीकरण, शुध्द उच्चारण का महत्त्व**

संस्कृत भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। आप अनेक वर्ष तक देवनागरी लिपि में हिन्दी पढ़ते रहे हैं अतः आपके लिए देवनागरी लिपि में संस्कृत पढ़ना कठिन नहीं होना चाहिए। पर यह अच्छा होगा यदि हम देवनागरी लिपि की विशेषताओं पर एक बार फिर ध्यान दें लें ताकि संस्कृत सीखने में हमें और अधिक सुविधा हो सके।

**1.1 स्वर**— संस्कृत में 10 प्रमुख स्वर हैं जिनमें से तीन स्वर ह्रस्व हैं और सात स्वर दीर्घ हैः

ह्रस्व स्वर — **अ, इ, उ**

दीर्घ स्वर — **आ, ई, ऊ ए, ऐ, ओ, औ**

इनमें से **आ**, **ई** और **ऊ** क्रमशः **अ**, **इ** और **उ** के दीर्घ रूप हैं, अर्थात् इनका उच्चारण उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार ह्रस्व स्वरों का, किन्तु इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना समय लगता है।

**ए** और **ओ** का उच्चारण संस्कृत और हिन्दी में एक समान है, पर **ऐ** और **औ** के उच्चारण में अंतर है और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हिन्दी के **है** शब्द में स्वर का जो उच्चारण है वह संस्कृत के **वै** के स्वर के उच्चारण से बहुत भिन्न है। हिन्दी के **भैया** शब्द में पहले स्वर का उच्चारण संस्कृत के **ऐ** के उच्चारण के निकट है। संस्कृत **ऐ** का उच्चारण **अ** और **इ** स्वरों को तुरन्त एक के बाद एक उच्चारित करने से होता है। इसी प्रकार संस्कृत के **भौतिक** शब्द में पहले स्वर का उच्चारण हिन्दी के और शब्द के स्वर जैसा नहीं है। वह **कौआ** शब्द के **औ** के उच्चारण के निकट है। संस्कृत में **औ** का उच्चारण **अ** और **उ** स्वरों को तुरन्त एक के बाद एक उच्चारित करने से होता है।

इन दस स्वरों के अतिरिक्त संस्कृत में **ऋ, ॠ** और **ऌ** ये तीन स्वर और हैं। इनका स्वर के रूप में उच्चारण अब लुप्त हो गया है। इनका उच्चारण अब प्रायः **र्**, **ल्** व्यंजनों और **इ**, **ई** स्वरों के योग के रूप में क्रमशः **रि**, **री** और **ल्रि** की तरह होता है। इस प्रकार संस्कृत में कुल निम्नलिखित तेरह स्वर हैंः

**अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ।**

**टिप्पणी: 1.** भारत के कुछ पश्चिमी और दक्षिण भागों में **ऋ** का उच्चारण **रु** की तरह होता है।

**2.** यद्यपि **ऋ**, **ॠ** और **ऌ** का उच्चारण अब स्वर के रूप में नहीं होता, पर संस्कृत व्याकरण में इन्हें स्वर ही माना गया है। इस बात को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है।

**3. ऋ** के दीर्घ रूप **ॠ** की तरह **ऌ** का भी दीर्घ रूप **ॡ** है पर इसका प्रयोग संस्कृत के किसी वास्तविक शब्द में नहीं होता।

**1.2 व्यञ्जन**– स्वरों के उच्चारण में फेफड़ों से बाहर आती हुई हवा लगभग बिना रुकावट के बाहर निकलती है। व्यञ्जनों के उच्चारण में कण्ठ से लेकर ओठों तक के मार्ग में हवा विभिन्न स्थानों को स्पर्श करती हुई बाहर आती है। इस प्रकार व्यंजनों में पहला भेद उनके उच्चारण के **स्थान** की दृष्टि से होता है। दूसरा भेद उनके उच्चारण के **प्रयत्न** की दृष्टि से होता है। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में फेफड़ों की हवा अधिक बल के साथ बाहर आती है। इन व्यंजनों को महाप्राण कहते हैं। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में कंठ में स्थित स्वरतंत्रियों में कम्पन होता है, इन व्यंजनों को **घोष** कहते हैं। कुछ व्यंजनों के उच्चारण में हवा मुख के साथ-साथ नाक से भी बाहर आती है, ऐसे व्यंजनों को **नासिक्य** कहते हैं। स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से संस्कृत के व्यंजनों का विभाजन नीचे सारणी में दिया गया है।

**व्यञ्जन**

(क) स्पर्श

| प्रयत्न | अघोष अल्पप्राण | अघोष महाप्राण | घोष अल्पप्राण | घोष महाप्राण | घोष नासिक्य |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्चारण स्थान | | | | | |
| **कण्ठ्य** | क | ख | ग | घ | ङ |
| **तालव्य** | च | छ | ज | झ | ञ |
| **मूर्धन्य** | ट | ठ | ड | ढ | ण |
| **दन्त्य** | त | थ | द | ध | न |
| **ओष्ठय** | प | फ | ब | भ | म |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (ख) | **अर्धस्वर** | य | र | ल | व |
| (घोष) | | | | | |
| (ग) **ऊष्म** (अघोष) | | श | ष | स | |
| (घ) **कंठय महाप्राण** | | | : | | ह |
| अनुस्वार और अनुनासिक | | | ं | | ँ |

**1.3** सरल व्यंजन- आइए, इन व्यंजनों के विभिन्न वर्गों पर क्रमशः विचार करें। पहले कालम के पाँच व्यंजन (**क च ट त प**) अपने.अपने उच्चारण स्थानों पर जीभ या ओठों के द्वारा हवा के सामान्य रूप से रुकने से उच्चरित होते हैं। इन व्यंजनों के उच्चारण में और कोई विशेष बात नहीं है इसलिए हम इन्हें सरल व्यंजन कहेंगे। ये अघोष अल्पप्राण है। इनका उच्चारण कण्ठ के भीतरी भाग से प्रारंभ होकर ओठों पर समाप्त होता है।

**1.4** विसर्ग ( : ) संस्कृत में विसर्ग ( : ) का उच्चारण हलके ह् जैसा होता है। संस्कृत शब्दों के अन्त में विसर्ग का प्रयोग काफी अधिक होता है। आइए, अब हम निम्नलिखित शब्दों को पढ़ें:-

अतः- इसलिए, **अपि**– भी, **पाठः**, **पटः**– कपड़ा, **एकः**– एक (पुंलिंग), **कः**–कौन? **बालकः**– बालक, **एकः बालकः**– एक बालक।

**1.5 अघोष महाप्राण व्यञ्जन**– दूसरे कालम के व्यंजनों (**ख छ ठ थ फ**) का उच्चारण उन्हीं स्थानों से होता है जिनसे पहले कालम के व्यंजनों (**क च ट त प**) का, पर इनके उच्चारण में फेफड़ों की हवा विशेष बल के साथ बाहर निकलती है। यदि आप अपने मुँह के सामने उल्टा हाथ रखकर **ख छ ठ थ फ** का उच्चारण करें तो आप हवा के इस झोंके को स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं। इसी कारण इन व्यंजनों को महाप्राण कहा जाता है। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए:

**पाठः, नखः छटा, फेनः, कथा, अतिथिः, नभः– (आकाश), अपि– भी**

**1.6 घोष व्यञ्जन**– सारणी के तीसरे कालम के व्यंजनों (**ग ज ड द ब**) का उच्चारण उन्हीं स्थानों से होता है जिनसे पहले कालम के व्यंजनों का। इनके उच्चारण में गले के अन्दर की स्वरतंत्रियों में कम्पन होता है जिससे इन व्यंजनों के उच्चारण में एक विशेष गूँज सी उत्पन्न होती है **क-ग**, **प-ब,** आदि अक्षरों के जोड़ों का उच्चारण कर आप इस गूँज को अनुभव कर सकते हैं। इस गूँज के कारण ग ज ड द ब को घोष

कहा जाता है। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िएः

**गतिः, पादः, देहः, गौः, दुःखी, दाता, जगत्, बलम्, दुःखम्।**

**1.7 घोष महाप्राण व्यञ्जन**- चौथे कालम के व्यंजनों (**घ झ ढ ध भ**) का उच्चारण तीसरे कालम के व्यंजनों के समान होता है पर इनके उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन के साथ हवा विशेष बल के साथ बाहर निकलती है। ये व्यंजन **महाप्राण** और **घोष** दोनों हैं। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िएः

**भगिनी**—बहिन, **नाभिः**, **घटः**— घड़ा, **अधुना**—अब, **दधि**— दही।

**1.8** नासिक्य व्यञ्जन- सारणी के अन्तिम कालम के पाँचों व्यंजनों **(ङ ञ ण न म)** का उच्चारण उन्हीं स्थानों से होता है जहाँ से उस वर्ग के अन्य व्यंजनों का, किन्तु उनके उच्चारण में हवा मुख के साथ नाक से भी निकलती है। इनको नासिक्य व्यंजन कहते हैं। निम्नलिखित शब्दों को पढ़िएः

**माता, जनः, नमः, कणः, मानः, तमः, मम, नाम, न।**

**टिप्पणी**— नासिक्य व्यंजनों **(ङ ञ ण न म)** को पंचमाक्षर भी कहते हैं क्योंकि ये अपने-अपने वर्ग के पाँचवे अक्षर हैं।

**1.9** अनुस्वार और अनुनासिक- अनुस्वार का उच्चारण अर्धस्वर, ऊष्म और ह् से पूर्व नासिक्य ध्वनि को बताने के लिए होता है, जैसेः- संयम, संशय, संहार आदि। अनुस्वार ( ं ) और अनुनासिक ( ँ ) में अन्तर है। अनुस्वार एक अलग व्यंजन वर्ण है, परन्तु अनुनासिक कोई अलग ध्वनि नहीं है। जब किसी स्वर के उच्चारण में हवा नासिका में से भी निकले तो वह स्वर अनुनासिक हो जाता है, जैसेः- **देवाँस्तरति, कस्मिँश्चित्।**

**1.10 अर्धस्वर और ऊष्म व्यंजन**— **य र ल व** को अर्धस्वर कहते हैं क्योंकि इनका उच्चारण स्वरों और व्यंजनों के बीच का है। आगे चलकर हम देखेंगे कि इन चारों अर्धस्वरों का क्रमशः **इ ऋ लृ** और **उ** स्वरों के साथ विशेष संबंध है। **श ष स ह** का सामूहिक नाम **ऊष्म** है। ऊष्म ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख में जीभ से रगड़ खाकर बाहर निकलती है। इनमें से **ष** का उच्चारण लगभग लुप्त हो चुका है और अब इसका उच्चारण **श** के समान ही होने लगा है। पर संस्कृत शब्दों को लिखते हुए **श** और **ष** का अन्तर करना महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए शेष शब्द में दोनों व्यंजनों का उच्चारण एक जैसा होते हुए भी उन्हें अलग-अलग रूप में लिखना आवश्यक है। निम्नलिखित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िएः

**सुखी**, **आशा**, **आयः**, **देवः**, **तव**— तुम्हारा, **सः**— वह (पु.) **सा**— वह (स्त्री.), **एषः**— यह (पुंलिंग), **एषा**— यह (स्त्रीलिंग), **वेशः शेषः बाकी**, **सखा**, **एव।**

**1.11** वैसे तो सभी भाषाओं में शुद्ध उच्चारण करना आवश्यक है पर संस्कृत में शुद्ध उच्चारण का विशेष महत्तव है। संस्कृत की एक सुदीर्घ और गंभीर मौखिक परम्परा है। संस्कृत की आत्मा में प्रवेश करने के लिए शब्दों का मुखर उच्चारण बहुत महत्तवपूर्ण है। संस्कृत के मंत्रों का पाठ, श्लोकों का वाचन, स्तोत्रों का गायन आज भी प्रचलित है। संस्कृत की ध्वनियों का अपना एक विशेष स्पन्दन है जो हमारी चेतना को प्रभावित करता है। इसलिए संस्कृत के वाक्यों को मौन पढ़कर उनका अर्थ समझ लेना काफी नहीं है। उन्हें बार-बार ऊँची आवाज में बोलिए ताकि आप संस्कृत शब्दों के स्पन्दन को आत्मसात् कर सकें। इसी प्रकार पाठों में आए श्लोकों को याद कर लीजिए और उनका बार-बार गायन कीजिए। इस प्रकार आप न केवल संस्कृत के शब्दों और उनके अर्थों को समझ सकेंगे अपितु संस्कृत की आत्मा में भी सहज रूप से प्रवेश कर सकेंगे।

---